अगस्त 2022 वर्ष 2, अंक 7

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार

"सभी पुरुषों की तरह, सांसारिकता के प्रलोभनों, जिनमें से बौद्धिक अहंकार (intellectural Ego) सबसे खराब है, के प्रति संवेदनशील फिर भी उन्हें ईमानदार और विनम्र रहना चाहिए, यदि केवल इसलिए कि उनकी पढ़ाई लगातार उन्हें इस बात का एहसास दिलाती है कि विज्ञान के विशाल लक्ष्यों की तुलना में, उनका स्वयं का योगदान, चाहे कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो,यथार्थता / सत्य के महासागर में केवल एक बूंद है।"

– लुई डी ब्रॉय
नोबेल पुरस्कार विजेता

विषय सूचि

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 2

उच्च शिक्षा के भविष्य के परिदृश्य 3

डी.ई.आई. से समाचार 5

सूचना केन्द्रों से समाचार 6

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार समिति 8

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

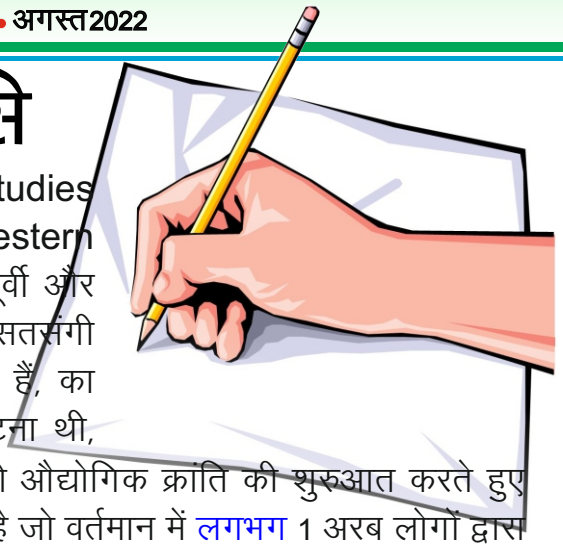

स्प्रिगंर नेचर पुस्तक,जिसका शीर्षक है 'Consciousness Studies in Sciences and Humanities: Eastern and Western Perspectives' ('विज्ञान और मानविकी में चेतना अध्ययनः पूर्वी और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य') जिसके संपादक सम्मानित प्रो. प्रेम सरन सतसंगी साहब, प्रो. एन्ना मार्गेरिथा होराशैक, और प्रो. आनंद श्रीवास्तव हैं, का विमोचन 23 अगस्त, 2022 को हुआ। यह एक ऐतिहासिक घटना थी, क्योंकि इस पुस्तक में पूज्य प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब ने पाँचवी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत करते हुए मानवता को लैक्टो–शाकाहार भोजन अपनाने का आह्वान किया है जो वर्तमान में लगभग 1 अरब लोगों द्वारा अपनाया गया है, जो कृषि–पारिस्थितिकी–सह–सटीक खेती के अभ्यास के माध्यम से, जिसका दयालबाग लगभग 107 वर्षों से पालन कर रहा है, पृथ्वी ग्रह पर अनुमानित 11 अरब लोगों के लिए इस तरह के भोजन का उत्पादन करने में सक्षम हैं। ऐसा साकार होने पर, मनुष्य इस ग्रह से परे अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं और अंततः सहज (Easy) सुरत–शब्द योग अभ्यास (Practices) के माध्यम से अमरत्व (immortality) अर्थात निर्मल चेतन देश में, काल/समय और स्थान /माया से परे निरंतर गतिशील निवास पा सकते हैं। [Vide Power Law of Meditational Consciousness].

जैसा कि शीर्षक में निहित है, पुस्तक चेतना पर पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोणों के लिए एक मिलन स्थल प्रदान करती है। **दयालबाग में चेतना पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान श्रधेय प्रो. पी. एस. सतसंगी साहब (दयालबाग मुख्यायालय के ''जय घोषित'' /''Acclaimed'' आठवें संत सतगुरु) द्वारा यह बताया गया था कि** "शोधकर्ताओं द्वारा किये जा रहे आदि–आबंटित कर्मों एवं संचित शुभ कर्मों के **परिणामों** को एकीकृत करने की अनिवार्यता है, जो राधास्वामी–मत की शास्वत सहज गतिशील गुरु–शिष्य परम्परा द्वारा अर्जित किये जा सकते हैं''।

इस तरह के अनुभवात्मक ज्ञान के कई उदाहरण हैं और यहाँ श्रद्धेय प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब से संपन्न केवल दो ही उद्धृत किये जायेंगेः

(I) ''.....राधास्वामी दर्शन के अनुसार चेतना के अठारह स्तर हैं, छह मानव शरीर या किसी भी जीवित भौतिक शरीर से संबंधित हैं, छह मन या सार्वभौमिक मन से संबंधित हैं और इसी तरह छह अन्य व्यक्तिगत आत्मा या सार्वभौमिक आत्मा से संबंधित हैं। ''यह मॉडल भौतिक जागरूकता के लिए और ब्रह्मांडीय (cosmic) जागरूकता तक सही शुरूआत करने के लिए जिम्मेदार है''।

(ii) '.....भौतिक वैज्ञानिक चार मूलभूत बलों (forces), जैसे गुरुत्वाकर्षण बल, विद्युत चुम्बकीय बल, कमजोर परमाणु बल और मजबूत परमाणु बल, को पहचानते हैं। वैज्ञानिक इन चारों शक्तियों को ही स्वीकार करते हैं। लेकिन मुख्य शक्ति आत्म–शक्ति (Spirit force) है जो इन सभी शक्तियों का स्रोत है। वैज्ञानिकों को इसकी जानकारी नहीं है। एक एकीकृत बल क्षेत्र को परिभाषित करने और इस तरह सब कुछ समझाने में सक्षम होना वैज्ञानिकों का अंतिम सपना है'।

प्रकाशक (publisher) द्वारा कुछ शब्द कहने के अनुरोध के जवाब में, श्रद्धेय प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब ने दर्शकों का ध्यान मानव शरीर में अधिवृक्क ग्रंथियों (एड्रिनल ग्लैंड) की ओर आकर्षित करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की, जो एड्रेनेलिन का स्राव (secretion) करती हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के हॉर्मोन

(hormone) शामिल होते हैं, जिनकी सहायता से शुद्ध आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त की जा सकती है। नशामुक्ति की समस्या और नशा करने वालों के पुनर्वास (rehabilitation) के लिए संबंधित नैतिक पतन (Moral Turpitude) का भी उल्लेख किया गया।

प्रकाशक के अनुसार, ''यह पुस्तक पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोण से चेतना के मॉडल प्रस्तुत करती है जो प्राकृतिक विज्ञान और मानविकी से दार्शनिक मॉडल के माध्यम से आध्यात्मिक दृष्टिकोण के लिए वर्तमान वैज्ञानिक अनुसंधान को समायोजित करती है। यह वॉल्यूम तंत्रिका विज्ञान, क्वांटम यांत्रिकी, एल्गोरिथ्म विज्ञान, गणित, और ज्योतिष विज्ञान से लेकर साहित्यिक अध्ययन, दर्शन, और (तुलनात्मक) धर्मशास्त्र तक चेतना अध्ययन में प्रमुख विषयों से अद्यतन अनुसंधान प्रदान करता है। यह खंड चेतना की पश्चिमी और पूर्वी धारणाओं के बीच द्विभाजन की जांच करता है – जहां चेतना को पश्चिमी वैज्ञानिकों द्वारा मस्तिष्क गतिविधि के रूप में माना जाता है, और विशेष रूप से पूर्व में विभिन्न धर्मों द्वारा एक दिव्य उपस्थिति के रूप में माना जाता है। निबंध एक–दूसरे को प्रासंगिक बनाते हैं और पारस्परिक रूप से संबंधित दृष्टिकोणों की क्षमता और सीमाओं को उजागर करते हैं। ग्रंथों का उद्देश्य चेतना के अध्ययन में विचारों का एक अंतःविषय और पारसांस्कृतिक (transcultural) आदान–प्रदान करना है और इच्छुक पाठकों से क्षेत्र के विशेषज्ञों तक पाठकों को संबोधित करना है। चेतना अध्ययन के शोधकर्ताओं के लिए यह वॉल्यूम मात्र / विशेष रुचिकर है''।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

उच्च शिक्षा के भविष्य के परिदृश्य

उच्च शिक्षा के विकास की कहानी, भारत में गुरु–शिष्य पद्धति और पश्चिमी दुनिया में कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए चर्च–नियंत्रित अनौपचारिक शिक्षण (जिसे शिक्षा 1.0 कहा जाता है) के साथ शुरू हुई और वर्ष 1436 में प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के साथ बढ़ी जिसमें शिक्षक ज्ञान प्रदाता और छात्र निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में थे जिसे शिक्षा 2.0 कहा गया। इसके बाद एजुकेशन 3.0 (अध्यापन और सीखने में कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग) का स्थान रहा। अगला चरण शिक्षा 4.0 था जिसे आम तौर पर दो उभरती प्रवृत्तियों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है [1]: एक सामान्य नवाचारों और शिक्षा व शिक्षाशास्त्र में परिवर्तन पर आधारित है और दूसरी शिक्षा में उद्योग 4.0 द्वारा शुरू की गई प्रौद्योगिकियों के एकीकरण पर आधारित है। जैसा कि News letter के पिछले संस्करणों में वर्णित है, इन विकासों का शुद्ध परिणाम यह था कि जिन विश्वविद्यालयों का इस दौरान उदय हुआ, उनमें छात्रों की जरूरतों को पूरा करने की प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा की अत्यधिक लचीली प्रणाली थी। इसके अलावा, वे एक बेहतर दुनिया लाने के लिए अपने आसपास के समुदायों से गहराई से जुड़े हुए थे। इस विकास से परिवर्तन के दो अंतिम रूपों को पारिस्थितिक विश्वविद्यालयों और तरल शिक्षण मॉडल पर आधारित विश्वविद्यालयों के रूप में नामित किया गया।

ब्यूडापेस्ट बिजनेस स्कूल, हंगरी के शोधकर्ताओं की एक टीम द्वारा मई, 2022 में प्रकाशित 'उच्च शिक्षा के भविष्य के लिए परिदृश्य' नामक एक रिपोर्ट में, क्षितिज स्कैनिंग, सिस्टम मैपिंग और परिदृश्य योजना के संयोजन की एक व्यापक प्रक्रिया का उपयोग करते हुए चार साल के गहन शोध के बाद चार संभावित परिदृश्यों को परिभाषित किया [2]। हर परिदृश्य के दो आयाम हैं: पहला, उच्च शिक्षा प्रणाली में लचीलेपन का स्तर (ज्यादातर सीखने और प्रशासन की प्रक्रिया के संदर्भ में), और दूसरा, शिक्षा का 'संविधान', जो एक सामान्य धारणा को संदर्भित करता है विश्वविद्यालय अध्ययन की भूमिका और कार्य, अर्थात् क्या वे व्यावहारिक रूप से लागू ज्ञान के प्रावधान के बारे में हैं (जिसे आयाम का 'सूक्ष्म' अंत कहा जाता है) या एक अच्छी तरह पूर्णतया विकसित व्यक्ति के गठन के बारे में जो एक बदलती दुनिया को नेविगेट (navigate) करने में सक्षम है (जिसे 'समग्र' अंत–holistic end–कहा गया)।

चार संभावित परिदृश्यों की मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में नीचे वर्णित किया गया है [2]:

परिदृश्य 1: निश्चित–सूक्ष्म कार्यक्रम (fixed – micro programmes)

भविष्य में, अधिकांश विश्वविद्यालय छोटे, अधिकतर एक वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पेशकश करके श्रम बाजार और समाज की अपेक्षाओं के अनुकूल होंगे। यह ''मास स्कूलिंग'' की एक प्रणाली है जहां सामग्री सेट की जाती है, प्रक्रिया तय की जाती है, और शिक्षण विधियां ज्यादातर सामने (क्रियान्वित) होती हैं (-cortex based)। आखिरकार, छात्रों द्वारा अर्जित प्रमाण पत्र उन्हें नौकरी की तलाश में फायदा देता है।

परिदृश्य 2: लचीला–सूक्ष्म कार्यक्रम (flexible–micro programmes)

भविष्य में, उच्च शिक्षा के क्षेत्र को विश्वविद्यालयों और वैकल्पिक प्रदाताओं द्वारा साझा किया जाता है, ये सभी छात्रों को श्रम बाजार में समय पर कौशल और ज्ञान की पेशकश करने के उद्देश्य से काम कर रहे हैं। प्रशिक्षण आम तौर पर एक वर्ष तक चलते हैं और गहन व्यक्तिगत कक्षाओं के लचीले शेड्यूल (schedule) के साथ ऑनलाइन सीखने को जोड़कर छात्रों की जरूरतों को समायोजित कर रहे हैं। छात्र ऐसे कार्यक्रमों में अर्जित माइक्रो–क्रेडेंशियल्स के अपने पेशेवर पोर्टफोलियो द्वारा आयोजित/समायोजित (curate) कर सकते हैं।

परिदृश्य 3: निश्चित–समग्र कार्यक्रम (fixed–holistic programmes)

उच्च शिक्षा बाजार का भविष्य वर्तमान से काफी मिलता–जुलता है: छात्र स्नातक (Bachelor) और मास्टर स्तर के कार्यक्रमों में डिग्री हासिल करने के लिए प्रवेश करते हैं जो उन्हें श्रम बाजार में एक निश्चित फायदा देता है। विश्वविद्यालयों में शिक्षण के तरीके धीरे–धीरे लेकिन लगातार विकसित होते हैं, और ज्ञान हस्तांतरण से परे, वे कौशल विकसित करने और समस्या–समाधान पर अधिक जोर देते हैं। विश्वविद्यालय न केवल शिक्षा का स्थान है बल्कि पेशेवर समाजीकरण और अंतर–व्यक्तिगत/कार्मिक (inter-personal/personnel) संबंधों के लिए भी हैं।

परिदृश्य 4: लचीला–समग्र कार्यक्रम (flexible – holistic programmes)

भविष्य में, विश्वविद्यालय की शिक्षा अभी भी स्नातक और मास्टर स्तर के कार्यक्रमों का रूप लेती है, लेकिन लचीलापन एक प्रमुख सिद्धांत बन जाता है। सिस्टम सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार है: छात्र अपने द्वारा लिए जाने वाले पाठ्यक्रमों के चयन (कुछ सीमाओं के भीतर) में सक्षम हैं, वे विभिन्न शिक्षण विधियों वाले पाठ्यक्रमों के बीच चयन कर सकते हैं, या एक वर्ष में पूरे कार्यक्रम को समाप्त करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। विश्वविद्यालयों के बीच एक गहन अंतर्राष्ट्रीय सहयोग है जो छात्रों को कई देशों और संस्थानों में अपनी पढ़ाई करने की अनुमति देता है।

– प्रो. वी.बी.गुप्ता द्वारा संकलित
समन्वयक, डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सन्दर्भ:

[1] Mamadou L Gueye, Ernesto Expósito. University 4.0: The Industry 4.0 paradigm applied to Education. IX Congreso Nacional de Tecnologíasen la Educación, Oct 2020, Puebla (Mexico), France. hal-02957371 (https://hal-univ-pau.archives-ouvertes.fr/hal-02957371/Document)

[2] Scenarios For The Future of Higher Education 2022 (https://www.researchgate.net/publication/360642436_SCENARIOS_FOR_THE_FUTURE_OF_HIGHEREDUCATION_2022)

डी.ई.आई. से समाचार

डी.ई.आई.मुख्यालय, दयालबाग, आगरा में स्वतंत्रता दिवस समारोह

जैसा कि भारत ने स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया, इस अवसर को चिह्नित करने के लिए दयालबाग, आगरा में डी.ई.आई. मुख्यालय में एक शानदार समारोह आयोजित किया गया। श्री ए. मणिकंदन, आई ए एस, मुख्य विकास अधिकारी, आगरा, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डी.ई.आई.–एन सी सी के छात्रों ने श्री और श्रीमती मणिकंदन को 'गार्ड ऑफ ऑनर' प्रदान किया। जैसे ही मुख्य अतिथि ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सभी लोग राष्ट्रगान के गायन में शामिल हुए, पूरा माहौल देशभक्ति के उत्साह से भर गया। इसके बाद डी.ई.आई. के सभी संकायों, कॉलेजों और स्कूलों की टुकड़ियों द्वारा उल्लेखनीय डी.ई.आई. बैंड की धुन पर एक भव्य और समन्वित मार्च पास्ट किया गया। परेड का नेतृत्व करने वाली टुकड़ी संत–सुपरमैन योजना के छोटे बच्चों की थी।

परेड के अंत में छात्रों के एक समूह द्वारा एक उत्साही और मधुर देशभक्ति गीत गाया गया और विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और मार्च पास्ट परेड को मुख्य अतिथि और निदेशक, डी.ई.आई. द्वारा पुरस्कार दिए गए। सुपरमैन इवोल्यूशनरी स्कीम और डी.ई.आई. नर्सरी एंड प्ले सेंटर के छात्रों की टुकड़ियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विशेष पुरस्कार दिया गया।

मुख्य अतिथि ने डी.ई.आई. द्वारा आयोजित उत्कृष्ट कार्यक्रम की सराहना की और छात्रों को अपनी कड़ी मेहनत, समर्पण और अनुशासन के माध्यम से भारत के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में योगदान देने के लिए तैयार रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि डी.ई.आई. की शिक्षा की पारिस्थितिकी प्रणाली एक पूर्ण और समग्र इंसान बनाती है और सराहना की कि डी.ई.आई. अपने छात्रों को देश के जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए वांछित मूल्यों और गुणों को उल्लेखनीय रूप से प्रदान कर रहा है। दयालबाग़ शैक्षिक संस्थान (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) के निदेशक प्रो. पी.के. कालरा ने संस्थान की उपलब्धियों को संबोधित करने के लिए मुख्य अतिथि को धन्यवाद दिया और छात्रों को नवीन समाधानों के साथ आगे आने और दुनिया की बढ़ती आबादी को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने की चुनौती का सामना करने का आह्वान किया। श्रीमती मणिकंदन ने भी छात्रों के प्रदर्शन की सराहना कर उनका उत्साहवर्धन किया। जीवन में सफलता के लिए अनुशासन को सबसे महत्वपूर्ण घटक बताते हुए उन्होंने कहा कि डी.ई.आई. में छात्रों का अनुशासन अत्यधिक सराहनीय है।

इस अवसर पर आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण के बाद संस्थान गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। डी.ई.आई. में कार्यान्वित विभिन्न नवीन उत्पादों और योजनाओं की एक प्रदर्शनी भी आयोजित

की गई, जिसे उपस्थित सभी लोगों ने खूब सराहा।

कार्यक्रम को भारत और विदेशों में डी.ई.आई. के विभिन्न अध्ययन केंद्रों पर प्रसारित किया गया था और दयालबाग के ई–कैस्केड नेटवर्क के माध्यम से हजारों लोगों ने भी भाग लिया था।

सूचना केन्द्र से समाचार

स्वतंत्रता दिवस समारोह, अगस्त 2022

भारत की स्वतंत्रता के 75 गौरवशाली वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, 76वां स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2022 को सभी डी.ई.आई. सूचना और आई सी टी केंद्रों में जबरदस्त उत्साह और देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया गया। कुछ केंद्रों ने तुरंत अपनी रिपोर्ट साझा की है जिसका उल्लेख नीचे किया गया है।

चेन्नई सूचना केंद्र

चेन्नई सूचना केंद्र के मेंटर्स, फैसिलिटेटर्स, छात्रों और पूर्व छात्रों ने स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। केंद्र प्रभारी द्वारा स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर एक संक्षिप्त परिचय के बाद, एक वार्ता सत्र था, जिसमें प्रत्येक छात्र, पूर्व छात्र और प्रत्येक संकाय ने कुछ मिनटों के लिए बात की थी कि उनके लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ है।

इसके बाद केंद्र के एक पूर्व छात्र द्वारा स्वतंत्रता के 75 वर्ष पर एक कविता पाठ किया गया। इसके बाद, संकाय और छात्रों ने हिंदी और तमिल भाषा में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

लुधियाना सूचना केंद्र

लुधियाना सेंटर में 76वां स्वतंत्रता दिवस कर्मचारियों, सत्संगियों और छात्रों द्वारा अपार हर्ष, रोमांच और देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया गया। मुख्य परिसर से लाइव प्रसारण देखा गया और सभी मुख्य अतिथि और निदेशक डी.ई.आई. के प्रेरक भाषणों से प्रेरित थे। प्रार्थना गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और सभी को जलपान कराया गया।

मुरार सूचना केंद्र

सूचना केंद्र मुरार ने स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया। सत्संग कॉलोनी मुरार में रहने वाले सत्संगी भाइयों और बहनों, छात्रों के अभिभावकों और अन्य लोगों को समारोह देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। इलेक्ट्रीशियन कोर्स के विद्यार्थियों ने भोजपुरी गीत प्रस्तुत किया। राधास्वामी स्कूल के छात्रों ने आत्मरक्षा पी टी और लाठी शो प्रस्तुत किया। डी डी टी की छात्रा माधवी ने स्व–रचित कविता प्रस्तुत की। इलेक्ट्रीशियन व मोटर व्हीकल कोर्स के विद्यार्थियों ने ग्रूप पी टी प्रस्तुत की। डी.ई.आई. से स्वतंत्रता दिवस समारोह का सीधा प्रसारण सभी ने देखा। सब को हलका जलपान कराया गया।

आगरा सिटी सूचना केंद्र

आगरा सिटी सेंटर के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया। समारोह की शुरुआत विश्वविद्यालय की प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद छात्रों द्वारा देशभक्ति विषय पर तैयार किए गए हिंदी और अंग्रेजी में भाषण और समूह गीत जैसे कुछ आइटम थे। इस अवसर पर शिक्षकों और केंद्र प्रभारी द्वारा प्रेरक भाषण भी दिए गए। डी.ई. आई. मुख्यालय से ध्वजारोहण का प्रसारण देखने के बाद सभी को अल्पाहार वितरित किया गया।

करोल बाग सूचना केंद्र

करोल बाग केंद्र में स्वतंत्रता दिवस समारोह की शुरुआत राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान के गायन के साथ हुई। इसके बाद विश्वविद्यालय प्रार्थना का पाठ हुआ। केंद्र प्रभारी ने इस महत्वपूर्ण अवसर पर सभी को संबोधित किया और भारत के 76वां स्वतंत्रता दिवस – आजादी का अमृत महोत्सव पर सभी को बधाई दी। वातावरण उल्लास और मधुर स्मृतियों से भर गया। समारोह का समापन यूनिवर्सिटी गीत के साथ हुआ और इसके बाद सभी को मिठाइयां बांटी गईं।

करनाल सूचना केंद्र

केंद्र में कर्मचारियों और छात्रों द्वारा स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। तिरंगा झंडा फहराया गया और सभी उपस्थित लोगों ने जोश और देशभक्ति के साथ राष्ट्रगान गाया। अंत में स्टाफ व विद्यार्थियों के बीच मिष्ठान वितरण किया गया।

डॉ. चेल्लापिल्ला भारद्वाज, डी.ई.आई. सूचना केंद्र करोल बाग में एग्रीविजन 2022 में प्रख्यात वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित

डॉ भारद्वाज 2010 से आज तक आर डी सी और अन्य बी.बी.ए. विषयों के नियमित संकाय सदस्य के रूप में डी.ई.आई. सूचना केंद्र, करोल बाग से जुड़े हुए हैं।

डॉ भारद्वाज, आई. सी. ए. आर.– आई. ए. आर. आई. में प्रधान वैज्ञानिक और कृषि संस्थान, UWA, पर्थ के सहायक एसोसिएट प्रोफेसर को कृषि 2022, प्राकृतिक खेती पर छठवें राष्ट्रीय सम्मेलन – आधुनिक प्रौद्योगिकीः समन्वय में प्रख्यात वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार विद्यार्थी कल्याण न्यास, भोपाल द्वारा ICAR, नई दिल्ली के सहयोग से पादप विज्ञान (Plant Science) के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण अनुसंधान और वैज्ञानिक श्रेष्ठता के सम्मान में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उन्हें पशुपालन, मत्स्य पालन और डेयरी राज्य मंत्री डॉ संजीव कुमार बाल्यान और डॉ टी. महापात्रा, प्रमुख सचिव, DAR और महानिदेशक आई. सी. ए. आर. द्वारा प्रदान किया गया।

फलियों (legumes) और दालों के प्रजनन में 23 वर्षों के वैज्ञानिक अनुभव के साथ, डॉ भारद्वाज सीमांत और उप–सीमांत चना किसानों पर ध्यान केंद्रित करने वाले एक उत्कृष्ट ब्रीडर हैं। उन्होंने 17 उच्च उपज देने वाली जलवायु लचीला छोले की किस्में विकसित की हैं और सूखे के लिए दुनिया की पहली मार्कर असिस्टेड ब्रेड चना किस्म (पूसा चना 10216) और विल्ट (पूसा चिकपी मानव) विकसित करने का श्रेय भारत को जीनोमिक असिस्टेड ब्रीडिंग ऑफ दालों के वैश्विक क्षेत्र में दिया जाता है। उन्होंने विभिन्न पुस्तक अध्यायों, पुस्तकों और तकनीकी रिपोर्टों के अलावा नेचर, नेचर जेनेटिक्स जैसी उच्च प्रभाव वाली पत्रिकाओं में 148 पत्र प्रकाशित किये हैं। उन्हें प्रतिष्ठित एग्री वॉच रिसर्च रिकग्निशन अवार्ड सहित चार अंतर्राष्ट्रीय और चार राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें मानद सहायक प्रोफेसर, कृषि संस्थान, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय, पर्थ से सम्मानित किया गया। वह इंडियन सोसाइटी ऑफ पल्सेस रिसर्च एंड डेवलपमेंट, कानपुर, भारत के फ़ेलो और इंडियन सोसाइटी जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग, नई दिल्ली इंडिया के फ़ेलो हैं। वह बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, ICRISAT, ICARDA, UWA पर्थ, DBT, DST, सास्काटून विश्वविद्यालय, CIMMYT के जनरेशन चैलेंज प्रोग्राम और ऑस्ट्रेलिया इंडिया ग्रैंड चैलेंज प्रोग्राम के सहयोग से कई परियोजनाओं का नेतृत्व करते हैं।

संरक्षक • प्रो. पी.के कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार • प्रो. एस. के चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक मंडल (अंग्रेजी अंक) • डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री. राकेश मेहता

अनुवादक • डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन • दयालबाग़ प्रेस